IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्र निर्माण की कड़ी में बिहार

डॉ0 कुन्दन कुमार

एम0 ए0, पी0–एच0 डी0 (इतिहास)

बी0 आर0 ए0, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में 19 बी सदी के बिहार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, चाहे वहाबी आन्दोलन हो, संथाल विद्रोंह, कोल विद्रोह, मुण्डा विद्रोह हो या 1857 की क्रांति। इन सभी आन्दोलनों तथा विद्रोहों ने ही एक ऐसी स्थिति उत्पन्न की, जिससे एक सशक्त राष्ट्र निर्माण का सपना पूरा हो सका। जिसका रूप 21 वी सदी का एक विशाल राष्ट्र भारत , वर्तमान में पूरे विश्व के सामने अपनी गौरव का गुणगान कर रहा है।

बहावी आन्दोलन ने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अद्वितीय योगदान दिया। बहावी आन्दोलन ने मुसलमानों को विधर्मी अंग्रेजों को राज्य में नही रहने को प्रेरित किया। उसने कहा कि मुसलमानों को अंग्रेजों के खिलाफ जेहाद करना चाहिए, विधर्मी राज्य को किसी भी कीमत पर समाप्त करना चाहिए, चाहें इसके लिए युद्ध भी क्यों न करनी पड़ें।

भारत में बहावी आन्दोलन के जन्म दाता सैयद अहमद थे। 1852 ई0 में सैयद अहमद पटना आये तो पटना पूरे बहाबी आन्दोलन का केन्द्र बन गया। पटना के विलायत अली, इनायत अली भाईयों ने वहाबी आन्दोलन को काफी गति दी।

पटना के तत्कालीन आयुक्त विलियम टेलर के शब्दों में, **"विगत कुछ वर्षो में पटना में असंतोष की ज्वाला भड़क रही है । 1846 ई0 में एक खतरनाक षड्यत्र का पता चला है जिसमें पटना और निकटवर्ती जिलों के मुसलमानों का हाथ है। वे देशी सिपाहियों से मिलकर अंग्रेजी शासन का मूलोच्छेदन चाहते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वे मुस्लिम राजवंश का पुनर्स्थापना चाहते हैं।"**

बहावी आन्दोलन यद्यपि एक धार्मिक आन्दोलन था परन्तु राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आन्दोलन के नेताओं के अनुसार ब्रिटिश शासन द्वारा शासित होना गैर–इस्लामी है। भारत में वहाबी आन्दोलन का संस्थापक सैयद अहमद थे। इस आन्दोलन का उदेश्य देश को विदेशी शासन से मुक्त कर एक प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना था। बिहार में इस आन्दोलन को गति पटना के सादिकपुर परिवार के मौलवी विनायत अली ,इनायत अली, शाह मुहम्मद हुसैन और अब्दुल्लाह ने दी।

कोल विद्रोह

राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में बिहार के छोटानागपुर के क्षेत्र में हुए कोल विद्रोह का महत्वपूर्ण स्थान है,

कोल आदिवासी छोटानागपुर के जंगली क्षेत्रों में रहते थे, जो स्वतंत्र प्रकृति के थे, जिन्हें किसी तरह के नियंत्रण में रहना पसन्द नहीं था। वे अपने क्षेत्र में अंग्रेजी शासन के किसी भी विस्तार को बुरा समझते थे। उन पर शासन छोटे–छोटे सरदार करते थे जो राजा कहलाते थे। जब सिंहभूम पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया तो वहाँ के राजा ने बड़ा विरोध किया। वहाँ की प्रजा 'हो' कहलाती थी। 'हो' अपनी सरहदों में किसी अजनबी के प्रवेश को बूरा मानते थे। 1820 ई0 में बिट्रिश राजनीतिक अभिकर्ता मेजर रफशेज और कोल्हन चायबासा आये तो उनका कड़ा विरोध किया गया। अंग्रेजों ने उनका दमन करना अन्त कर दिया। 1827 ई0 में अनेक हो मारे गए तथा सैकड़ों के घर जला दिए गए। यह विद्रोह शीघ्र ही हजारीबाग, राँची, पलामू, और मानभूम मे फैल गयी। हिंसा और लूटपाट की घूम मच गई। एक बार तो छः सात हजार दंगाईयों का सामना करने में अंग्रेज अश्वरोही को पराजय का मूँह देखना पड़ा। बड़ी कठिनाई से मार्च 1832 ई0 में उनका दमन किया जा सका।

आदिवासिंयो के कुछ नेताओं ने तो मरते दम तक अंग्रेजी सेना का सामना किया इनमें बुधों भगत का नाम उल्लेखनीय है वह अपने गाँव की रंक्षा करने में पूरे परिवार और 150 अनुयायियों के साथ मौत के गले लग गया। 'हो' बिद्रोही भी बने रहे तथा 1836 ई0 से 1837 ई0 मे फौजी कारवाई करके ही उनका दमन किया जा सका।

यद्यपि कोल बिद्रोह का दमन हो गया लेकिन इसने पूरे भारत को आन्दोलित कर दिया कि राष्ट्र निर्माण के लिए अपने को इतना मजबूत करना होगा कि अंग्रेजों को बाहर करने के लिए कोई भी कदम उठाने में हिचक नही हो।

संथाल विद्रोह

राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में बिहार के संथाल विद्रोह का महत्वपूर्ण स्थान है, जो 19 वी सदी की एक अनोखी घटना थी। संथाल विद्रोह 1855–56 ई0 के दौरान बर्द्धमान से भागलपुर तक के क्षेत्र में हुआ। इसका नेतृत्व राजमहल अनुमंडल के भगनाडीही गाँव के चार भाई सिदू, कान्हू, चांद और भैरव कर रहे थे।

ये आदिवासी बड़े सीधे–साधे और अनपढ़ थे जंगलों और प्राकृतिक वातावरण में रहना पंसद था। 1855 ई0 के आस–पास इनके इलाके में बाहरी लोगों के साथ–साथ अंग्रेज आने व रहने लगे वे इन बाहरी लोगों को 'दिक्' कहते थे। ये 'दिक्' इनका बर्बरतापूर्वक शारीरिक व मानसिक शोषन करने लगे अपने पर दबाब बढ़ते देख जून 1855 ई0 में सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में दस हजार संथालों ने बिद्रोह कर दिया। उन्होने भागलपुर और राजमहल के बीच के संचार–व्यवस्था को थप कर दिया रेल–पट्रियाँ उखाउ दी गई तथा तार काट डाले गए। उन्होने कम्पनी शासन के अंत

की घोषणा कर डाली। तीर–धनुष ,कुलहाड़ी, तलवार इत्यादि से लैस होकर ये संथाली झूड़ में निकल पड़े अनेक अंग्रेज बगवान मालिक , रेलवे कर्मचारी, पुलिस अधिकारी मारे गए। सरकार ने विद्रोह के दमन के लिए फौजे भेजी बन्दूकधारियों के आगे संथाल टिक नही सकें। कुछ ही हत्या कर दी गई तो कुछ जंगल में छिप गए। अन्तोगत्वा इनके विद्रोह का अन्त हुआ।

Revolt of 1857

राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में 19 वी सदी में घटित हुई 1857 ई0 की क्रांति का अद्वितीय स्थान है जिसमें बिहार ने बढ–चढ़ कर हिस्सा लिया।

25 जुलाई 1857 ई0 को दानापुर फौजी छावनी की तीन टुकड़ियों ने ब्रिट्रिश शासन के विरूद्ध ब्रिद्रोह कर दिया 26 जुलाई को ब्रिदोही सैनिक शाहाबाद के बाबू कुँवर सिंह ने नेतृत्व में आ गए। उन्होंने जगदीशपुर में अस्त्र–शस्त्र का एक कारखाना खोल रखा था तथा 20,000 सैनिको के छह महिनें के लिए रसद का प्रबंन्ध कर रखा था। कुँवर सिंह बिहार के बाहर भी सक्रीय थे। वे रीवा, ग्वालियर, लखनऊ, और आजमगढ़ के क्रांतिकारी नेताओं के साथ मिले हुए थे। अगस्त 1857 ई0 में बिहार छोड़ने के बाद वे अनेक जगहों में स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर अंग्रेजों को नाकों चना चाबाते रहें। इसमें उन्हें आम लोगों का भी सहयोग प्राप्त था। इस संयुक्त कार्रवाई की चर्चा करते हुए एक समकालीन अंग्रेंज सैनिक अधिकारी ने लिखा, **"संकट आ गया। पहले तो यह बिलकुल सैनिक गदर था, किन्तु शीघ्र ही इसका स्वरूप बदल गया, और एक राष्ट्रीय विद्रोह हो यगा। बिहार, बनारस, आजमगढ़, गोरखपुर, मेरठ, आगरा, रोहिलखण्ड और अवध में हमारा शासन हिल गया और सबों ने हमारे विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।"**

21 अप्रैल, 1856 ई0 को कुँवर सिंह ने बिग्रेडियर डगलस के अधीन अंग्रेजी सेना का साहसपूर्वक सामना किया। युद्ध में वे घायल हो गए और एक हाथ भी उन्हें खोना पड़ा। उसी रात वे शिवपुर घाट मे गंगा पार कर गए। एक समकालीन दस्तावेज में वर्णित है, **–" गंगा के दाहिने किनारे ग्रामीणों ने बागियों की मदद की।"**

23 अप्रैल को कुँवर सिंह जगदीशपुर पहुँच गए। इसी दिन कैप्टन ली ग्रैंड (Captain le Grand) के अधीन एक अंग्रजी सेना जगदीशपुर पहुँची जिसे पराजय का मूँह देखना पड़ा और काफी नुकसान उठाना पड़ा। विजेताओं ने उनकी बन्दूकें छीन ली कुँवर सिंह के विरूद्ध भेजे गए तीन सौ सैनिकों में केवल 25 या 30 यूरेपीय , 35 सिख तथा 7 अधिकारी ही आरा लौट पाए। 23 अप्रैल को आज भी 'विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। विजय दिवस के तीन दिनों के उपरान्त ही वीर कुँवर सिंह की मृत्यु हो गई।

वीर कुँवर सिंह के निधनोंपरान्त भी आजादी के दिवानों ने जंग जारी रखी। इनमें अमर सिंह, हर किसन सिंह, जोधन सिंह, अली करीम तथा अन्य लोग शामिल थे। इन्होंने राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला को लगातार जारी रखा। फलतः 19 वी सदी में बिहार पूरे भारत में राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में नेतृत्वकर्त्ता की भूमिका में रहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

बी0 एल0 ग्रोवर,– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम।

कौलेश्वर राय– बिहार का इतिहास।

एल0 पी0 शर्मा– आधुनिक भारत का इतिहास।

डी0पी0एस0 मनराल– राष्ट्रीय आंदोलन।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद– इंडिया डिवाइडेड।

राम मनोहर लोहिया– समाजवादी आंदोलन का इतिहास।

विपिन चन्द्रा– राष्ट्रीय आंदोलन की दीर्घकालीन राजनीति ।

उमा मुखर्जी, हरिदास– फाइट फोर, फ्रीडम एण्ड स्वदेशी जागरण।

त्यागी व रस्तोगी– भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन।